

2324

2324

10/10
10/10
10/10
10/10

10/10/10

10/10/10

10/10/10

॥ ६६ ॥

श्री साङ्ख्येन वरुणी



COPYRIGHT

B.T. 481

श्रीगंगायाय नमः ॥ अथ हित उपदेशकथा ॥
 सिद्धि साधने मुना मनु प्रसादात् स्पृष्टुं जीति जयाता
 भिः केन लिख्यते ॥ अथ धर्मि सासेन कलागोपे साधु
 जीति जना प्रादुर्दृका प्रसादो मर्जनमग्न्यहस्त
 वै ककाग्ने सिद्धि दुन्दुभी माहादेव कासी जटामा
 वस्या किर्गीगा फित जलासे दो चंद्रमा का कला जला
 स्वभायमान भैरव इत्येतैर्गोपित उपदेशः
 का कथा हा लेख्य स्मृत पत्रि वृत्त चोत्तना कापनि
 मुगुदुन्दु त्रितिसास्त्र मापनि ज्ञानि दुन्दु से सर्वसा
 रमा गोपानि मग्न्य ले सदा को अज भैरव भैरव
 लाक्या र भैया जला मन मा धानिक न वीजा का
 नीभना मग्न्य धन आर्त्ता मापनि अज भैरव पाया
 का दुर्भया जला गानि उपार्जन मग्न्य पद तस्का
 ले यो मीसा सर्व अदुर्लभा विप्रा धर्म हो कला
 तरुले अया विप्रा असा का रा न ले भयो चोले
 भयो अग्नि ले भयो हरे सक तुं के ले पनि क्षय न दु
 ग्या ते स्का रा विप्रा धन जितिका दुलो भोका

केहि है न भनि सतपु रुख प्रभु सा रोजा नि गर्ज पछेज
 स्त्री गी नदि लेनि वगाइ करग कहर ले आइत पु
 ग्या ठाउ पा सपु दु सपन पुण्या उछ नस्का गुण बीजा हु
 न्या ले सवै आनंद हत मै वुहूँ सो सै सा मा रु दु काल भ
 या पीत धन विद्या हुता हुन भनि जातु तस्कार गुले ज
 स्त्री न भौ माय का माडा मा गय्या को वसु अमु दु दु दे
 न तसै बाल स काल मा पद्या को विद्या कसै का पाते
 ह ध दु न तस्कार गुले बीजा धन को चर्चा हा बहु
 ते गर्ज पछे री चतुर्वर्ग गी न मार्ग भेदे नि संप्रद गी
 भिन्न लाभ मुह द भेद बीग्रह सवै इचा थोक को क
 था हा ले हित उपदेस का क था हा प्रक है नु ॥ ॥ गा
 हा प्रात भागीरु धि भन्या को भैगा काति रा मा यह भन्या
 का ये कन गर रह छ त सन ग रा सी पुण रा मा काल भ
 गा ले पुन भन्या का मुद सन न ना ना भग न्या को ए
 जा थिया न सग जाले ये क दिन विषय को दि विष
 जा नि ज न ह रु ले पद्या का सुनि या या ए भन मा विवा
 गर्न ला ग्या त वरा जा भा ग्या गद रु भन का सी भेद स

वैप्रातः न्यात नरे व्याका करे देवा ह्या सास्य नमो को
 सैवका आ वाधे पा हो भग्न सास्य नमो को
 मन व्य करण अं हो भाने जा न्नु राज न्ना धन
 मन्ता जो भनम ता विवेकि को चार धोक जस्य गु
 व्य धां जी हुं ह भनर्थ हो भाने जन्तु सेक थो कले भाव
 पन भाव सीठे जा ह भन्ना का भर्ष सु शि कण मुद
 मेरा नाभ रा जाले मन विषे चित नाग मान सध आ
 फा होरा ह ह भवे मु धा थिया इ न हो रा ह ह क न क मो
 गो पुपै डा मा लाउ था हो भाने मन मा वि बा रा गु ए भ
 न्नु रे ला हो रा ह ह भया ले का गत्र ह न स्का हो रा
 ह न्नु तन हो रा ह ह भानि पीडित धर्मात्मा दया वं न भ
 या का जस्का का गु भा भा का प्र यो जन कु दे न त
 स्ते मु र्ष हो रा हो भन्नु वा वा म ह तारिका
 सरिर को छि न मा व ग र्पा हो रा डे न हो
 रा ज न दा स्य वै करण प्र सि ह ह व स त व
 हो रा ज न्म भ भ ॥ ॥ से के ना वि सु पु
 ने न वि आ ज्ञ को न सा ध ना ॥ कु ल पुरुष

सिंह न वदे नैव प्रकासयेत् ॥१॥ तागा प्रा
त विष्णोर्वर स ज न भया तासु के पुत्र ले
पनि आफना कुल प्रकास ग ह न ज स ह
राले हान गे ह न त प स्या पनि गे ह न स
ग्राम मा पानि सुरे भये न बोलना मा
सास्त्र को भेद न पाई बोलना जग प
गर्पासि सा छो ए भया ले ता वा वार आ
मा कारा सो क सीता प्र मा त्र दि न्या हो त
सो छो ए को को ह प्र धो ज गे ह न पुत्र क न ज ग ह
वस न म्या मने कुल व स सा ज स ह त दि म्या ह व स
ता रे के पुत्र ले पानि दु ह छो ए ज गी क रा ज्पा ना
पी डित धर्मोत्सा द्या व न मेल त न न भया हो वि
ता भया वा दि न नु म्या कि नी को हो न नु भया वा
ज ग द ज ग ह को ज ग म् ब दु छो दि ज म्या हु दि
के म्या द म दि नु पा उ ह धो पानि ब दु ते ध म ह न
भं नु गुनि जन का ले सा ग हो ज स छो रा को
ले सा ग हो ले सा भय न ता न स छो रा कि न ता रि

कनकाशे र ह्याके भन्नु तसर्थ पूर्व जन्म मा
 धर्मगत्या का पुं भू भया हुदि धर्मका फल लेख
 मात्ता जानि पीडित धन वीत वावा महतारिका
 वसमा रह्या हुन आन्ध ते स्ता कन छोरा भन्नुने
 स्ता छोरा ले नित्य धन आर्जन गरि वावा महतारि
 कन सुख भोगिदिन्छु स्त्रिजन कस्ता हवसु भया
 रहने सुता क्षिण मधुर वचन बोल्छा हवसु ते
 स्ता कि छोरा पिता माता कुवसमा रह्या आ
 फला कुल धर्म प्रकाश गमा हवसु तब मैमा
 मा जन्मति न सुख भोगि कै हो भनिकरा नस्कार
 रले मैरा छोरा हव कण सुबै डा मा लाई कन गुनी
 गमा न जन्नु तसर्थ बुढा बुढि हवले भया को हव
 सो भया आया धन पिआ धर्म इचा थोकत
 गस्कन जाति दिवा का हव निविधा ता ले गर्ने दि
 खिले वि दिवा का हव मोहि मान पाउँछ नै पनि
 वावा महतारिले बाल्यदेखि आफ्ना छोरा कण
 सुबाल मा लाई राख्न पढेछ ॥ गभवस्य भावि

मोआभाबधीति महतामयि ॥ नगाल्वीनिकलीत
 स्प. महाहिमे. हिर्गाहोस ॥१॥ रेसैसासाज्ज
 लीकन. भावीवाट. लेषिदियाका. कुण. अमुभेग
 मवेले. भोगगर्तुपया. रहेह. ~~ह~~ दहाभक्या
 हभन्या. भावीकारवा. ललेनैलोक्यकाठाकुण. इ
 भ्राभाहोदेवकनपीत. विलकेठवनाई. कणानग्रभै.
 रहनुपोथ्यो. वैकुण्ठमारह्या. हीर. भैयाविष्णुप
 रमेभालेपीत. सप्तताग. कामेज्याभा. रोह. जलमा
 हनुपयो. ज्याहुया. कुण. आफला. कर्मसा. आविले
 लेषिदियाकोह. सोकुण्ठनभै. रहनुदेव. तैपगिरेस
 संसारसाज्जगलियापोह. कयाकर्मवारी. केवसा
 धर्मकर्म. जयाका. कयाछेराकेछोरिले. भयो. वीठ
 येतिनुपर्दछपातीजतका. मार्ग. अधिदेवि. ~~ह~~ आ
 कया. कुलदेविगारि. आजाका. चालतहोडि. दया
 धर्मका. चालमारहनु. तसभनुअकत. ग्रहलोकमा
 सुप्रसपति. परलोक. मोक्षगति. पाइन्छ. जसदे
 रालेधर्मछाडि. कुलको. चर्चागारि. कुलकर्मउपम
 छाडि. रह्याछतस्कण. बडो. अस्सी. भिगरे. ननु

कसो मया यकै चक्र ले जात्र रथ चन्देन तसो हो
 रथ चलाहुहुई चक्र वाहि च तसो पारिकार ले
 विना धर्म काहुअ मले भागे फलित हुहुई न ध
 र्म गन्या प्राप्ता भाग पछ किछु न भनि जानि च
 ॥ ॥ पुर्व जन्म कृत कर्म तदेव मिति की अते ॥
 तस्मात् पुरुष कोरेण यत्न कृष्यादि तीर्थे
 ॥ ३ ॥ पुर्व जन्म मा गन्या का धर्म कर्म जो छ तस
 कर्म का अनुसार देव वा द भोग पग रादु दिछ
 सो उजि छोराले कुल कर्म धर्म न छोडि गर्व
 पछ तस्कारण भलो होला पुतिकाम कारण
 रिक ए पति देव फले लानला तस्मनु अ करण
 देखै छैन जसो गरि क ह्माल ले यकै माया का
 नाना तरह को मोडा बना हुहुई तसो गरि पु
 र्व जन्म मा आफु ले जन्मा को कर्म यस जन्म मा
 सुख दुख भागे फल पाइ छ अरु पनि भन्पा
 को छ आफु ले पुर्व जन्म मा राखि न आया को
 भया तो आफु ना सुख जा नि भया को धन द

व्योमदेववाट हिलाइ दिहेन आफू हात
 लेउठाइलि मुष ईदतस्कारले होएलाइ
 वाव आमाले वेलावखत्ता रापहा थाका
 निवाइ आमावैहि हुन भन्नु कथा अर्थले भ
 न्पाहेसकासा भामा वकुला वस्पा ताही मुख
 होए जोहु - हसजन कास भामा स्वभायक
 देव ॥ ॥ रूपजो भन सीप न विसाल हन सीप
 पा ॥ विआहि नन से पिले नगधाहि न कि मुका ॥ ॥
 देखनारामो जो भन पुन हवस वडा कुल मजि मालि
 उन सीपति भरी पुन हवस ते पनि विआन जीन्पा
 का होए को कहि प्रयोग न देन वास्तान न भन्नाका
 कुलको पोरि आइय कसैले राखे देन भनि सुदस
 न नाम गन्नाका राजाले मनमा विचार गरि साभाभा
 सवै पीडित हरु बोलाइ कए भन्दा भयो ॥ ॥ राजोवा
 वा हे पीडित होयो पैडामा पसि रूपाका मरा होए
 हरु कए सास्त्रका उपदेस लेगी पुन जन्म भया
 वाहि रुपेडामालाइ देउ हिरा सुन्का गहना लाइ

दिया कुदितावायूर पानिमानि सको सो भोजाहि
 कुंछ छोटा मानि स पानि वडा का संग गन्या हुदि
 पडे हुन जा न्ह तस्का रणा ति मेरा छोटा हस्त जन
 का संगत गन्या हुदि शुद्ध नन कि भो विविग न्या
 को हो भनि राजाले पाडित हस्त संग विनिगद वि
 क्षुसमनि नाग न्या का पडित हस्त प्रति मे भै राजा
 संग विनिग छन हेम हाराजा वडा कुल मा जन्म लि
 या का इराज पुत्र हस्त कएनी तिसास्त्र पहा हुन
 कयान सैकन हस्त का निर्मल वीसमा जन्म लिया
 का मू मू वराज मू हस्त पुत्र न भै क प्रत्र कयान हु
 नन क्या हो भन्या विद्या जान्या पछि मु छ हस्त
 पानि गपानि हु न्ह तस्का रणा हस्त का पुत्र हस्त
 लाइ छ मेहा भैरमा सास्त्र जान्या गुल्पा गुला भ
 निविह सभा पाडित ले विनिगद राजाले भाग्पा
 गछन हे पाडित मू वडा मनुष्य ले प्रतिश्र गन्या
 हुदि ताहु गा पानि वडा कुंछ कस्त किये पानि क
 ल का संगत ले दक्ष का सीरमा वडा हस्त से परि

कारलेवडाका संगगम्पा हुदि वडेक हुना ५६५
 डवे चलमा रम्मा का डवा धातु पनि श्री मुज्जेका
 किरानिलागदा जागुले तेज हुन जाहु तसे पकिा
 रले हिनव ~~व~~ पनि वडाका संगगम्पा हुदि वडेक
 न जाहु तस्कारण मेरा पुत्र हुरुलाइ मुपेडामा
 लाहना का भये कतमाइ ~~का~~ भोग सामा जुलाग छ
 भानि आम्पा गारिका पीडित थाइ होरा साप्पार
 गपुत्र हुरुपानि पीडित गुरु पाइ करा सायग वार
 येक विगारि प हुलाग्पा पीडित निरा गपुत्र हुरुफन
 उवा ठाठमा युका तस्थल मावसाइ कन मन पडाक
 थाहा कहनाका भारे भगन लाग्पा ॥ ५६ ॥ इति श्री
 हितोपदेश नितिसारे मित्रलाभ कथा हो प्रथमा
 ध्याये ॥ १॥ कावेसास्त्र धनोदेन कालाग छति धि
 तमा ॥ वसनेन ननु मुखाति निरुपाक लहवता ॥ विह
 सभा पीडित ले राज पुत्र हुरुफरा भच्छन हेरा राज पुत्र हो
 येक वितामन गारि नम कथा हा कह छु कसो बन्मा
 जोग्पा निज नहुन्छ कसो सास्त्र का कथा हा सुनिदि
 नकाइ दछन भव हुरुले उवा खलि कलह गारिदि

न काइ दूख न तस्काएग तमामनमा सुख दिना कागक
 बुवाको वडो विवित्र भयाको कथा हा कहनु छु भन्दा
 राजपुत्र हुस्ले आगपागर्न हुस्ले सभभारपुँडित्तिक था
 हा कहनु लाग्पा हेराज पुत्र स्वस्थ चित्त गरि सुनु हुस्ले
 धन नहु न्याले काउर्षे सिद्धि गन्पा काउर्षे मित्र कावल
 ले पनि काउर्षे सिद्धि गन्पा था ताहा प्रात कसो न भोगा
 दापरिका रमा हाय के वडा सिमल कावु हाथि
 था तेस वृक्षमा होना ना दिमा देखि आइकन पीछि
 हल्लवा सुवस दथा ताहा प्रात कालमा असया चल
 भन्पा पर्वतमा चन्द्रमा पुग्ना लघुपतन भया को काग
 वस्पा केरि हेरु तेस्का गले जसो गरिय मडाले हथो तस्ले
 गरि हेरु हेरु हेरु जो मुर्छ हुन्छ तपो सो कहनु ना ठाठ मारा जि
 जाला जान्पा मानि रजावे नय सरी सामा नमन्पा भा
 निसु हल्ले याति नगर्त भनि चेतो यो ताहा प्रात सुति
 रमा को पीछि रुक गाल लघुपतन कागले अर्छु हे पाँछि
 हो आज्ञा न्या धिसोक मरणा का माहाबुला भये छ
 यक थोकु पदम भेरु न्या छुन भनि सबै पीछि हल्ल
 करा ठाठ याताहा प्रात तेस्का धाले वडो वनमा जाल
 फि जायिक नजाला भित्र वाक्ल छरि यो आफु ल

मा

किरलोतसेसमयमाचित्रवभरकापरेवाका
 राजालेआफ्रापरियास्मेतजोआफ्रासेनालस्का
 थियोनिहुरसवैकाणअकासखेगगरीउदिआउ
 हाभातेसुवाधलेद्वीराच्याकावावरिद्वारयो
 वावल्कतावारआयोयेस्माताकेहिकाएणहोला
 नवमिवानाकालोभमापयाहुदिताहामिलाइभुभा
 हुन्याछेनकसोभमासुनकार्केकरकोलोभलेउठो
 पाद्यलेसिममापरिउहाडुकणवारमाहिदुन्यावडो
 होशस्वनलाइमोथोतेसैहोला॥१॥इतिधीहि
 तउपदेसुमिनिस्सोमिन्नाभकथाहउतियोधाय॥२॥
 यतिसवैकुसुनिकणजोआफ्रालस्कापरेवावरसवै
 लेवितीगरीलाप्याहेमहाएजयोकरकेसोहेआप्या
 गर्तहवसुभनिवेतिगपारतवचित्रस्वरजाभ-हर
 हेवेवाहोसुनयोकरफहहुताहप्रातयेकदिनये
 कफोइदिसाकावनमाचहुजादाभैलेप्रतहदेव्याका
 छुतेसुवनमायेकवाद्यथियोतेसुवाधलेअहानगरी
 हातमाकुसुमिकनवजतलाउमाडुविजयध्यारगर्न
 नागिरहोथोतेसुवेलामापाद्यलेउठोप्राप्तनफेन
 हेव्यारप्रलगाकनवाद्यभरहेवयोहिवाचनआ

हासमा चलाइ गर्नु हवरा ममोरतवकरो हिवा हुरा
 वडोलो भि भैक ए मममा विचार गि ममा छर आज
 तो मेरा भागेले धन प्राप्ति हुन लाग्यो कि विपत्तिकालेला
 आयो भनि अलिक भै उपलागि हार फेरि मममा
 विचारले भन्छन येस्ता सै देहले मकर ममा हुनो देह
 नृपाल सम्म सुख को प्राप्ति हुन्छ ममा सदेह मानि
 करण हुदै न अववाध सित विस्तार गहि रू भनि वाध
 धै भन्छन देवा धतेरा के करण काहा छु महरू भूदा वर
 दिवा हुरा क ए वाधले के कन हात मालि देवा यो भ
 छ देवा हुरा मे भ अहमा रा सि वि भै करण दान दिना करण
 गयार भै र हमा छता हा पीछि म गुरु पनि भया सुख मा दान
 पनि मेरा छैन र हंत मा पनि नगर छैन र सता गुरु भै र हमा
 छु ति मिले मेरा विचार कि नमा देन जगप गनु वेद धर्त
 स्मदिनु तूप सपा गर्नु सत्पे वालनु धिर्ज्य भै रहनु सबै का
 दमा गनु येति आउथो कवडा कसित मात्रे ऊरु सबै
 सित हुदै न तस्कारन मैले लो भदो डि रा स्या हुन वरा का
 न आप्ता हात का सुन का के कन दिरा हुनु दया मा हु
 छ तो वाधले मममा कन या छ मगिलो के हल भ
 धन तस्कार मा मैले धर्म सास्त्र ममा को हुं तो सास्त्र

मफहहु तिमिसुनुहवसताहाप्रातकसोभन्यायोसंसा
 माजोसई नधमत्तिहहृन् आक्र आत्मारपा आत्मा
 जानि परआत्माताइहयागद्धन असुपणिअरु कथा
 हागउमिदातगर्दमाउवसुबप्रियकामगर्दमालोक
 हहसबैले प्रनामगर्दहृन् तस्कारगाले तिमिवाहम
 गालाइमैलेवडोहरिदिहृन् अपार मायाले मोसुह
 काकैकनदिहृन् भन्याकोहो गितामापाने धाहसने
 राजागुविहृन् लाइ भन्याकोहृन् गुविहृन् जोकोहि
 हरिदूकैगालिहृन् तिनकरकगदिहृन् भरिपुनगी
 क्योहो भन्याजोरेगिहृन् तस्कन ओवदिहिया लाग
 ह निराहिलाइ ओवविहियाकोकेहि प्रयोजन
 हृन् असुपनि भन्याकोहृन् कसो भन्या जो सुपात्रहृन्
 पुन्यभूमिविचारिहृन् लातेरादानको अक्षय
 भंडार भनिजागुतस्कारगाले म कासी हहोडि
 सरोवरगंगाभा अक्षयगिरियोसोवरा काकैक
 ली न किन हवसु भदावाधकावचन सुनिहृन् उकोवा
 हन लेलोभकोमा यागहिसरोवरगंगाभा अक्षय
 न गहृन् भनिजादाभा वडोसिममापयो अनेकवल
 गपारवलगहृन् पाने तेलसिमवाट उमक नसेकन

रतववाद्यभरुहेउछोवाहारापरिपुर्विमतलाइ
 उकाहुनाभतिहलौहलौजाइकरावयोहिवाहारा
 करासंमात्तोवयोहिवाहारालेमनमाचितनागनेला
 गोक्वालागुडुआत्मलेभन्याकोववरक्याकुरेभ
 लोहोलाभतिनहल्लेधर्मसास्त्रपह्लाकाभयापनिवे
 दपह्लाकाभयापनिगस्कोअघीदुखिआसोभावव
 स्पाकोछतोसोभाकदावेरहुतैदनसौपरिका
 रलेवडाकासोभावडेहुरुडुवकोसोभाउरुहुरु
 डुवचिरगन्याकोहोपापनिअर्थहोकसोभन्याहाति
 लेअष्टानगन्याकोरउरुयनभयाकिअखिजनलेगहनलगा
 याकोभारिवोकन्यामात्रहोगानभैकएकतव्यननसक्या
 पोपनिमारेहेभनुतस्काहोमैलेजानिनआफुकरामा
 न्यासितकिस्वासगन्यानिमिसासुमापनिभन्याकोछक
 सोभन्यापैहेप्राणिकासोभायविचारगर्नताहापदिगन
 सिलकोविचारगर्नसोभायभन्याप्राणिकोमसिमोट
 हुरुभतिविचारगर्नगर्देवाघलेकरोहिउछोवाहमन
 फनमारेथो॥५॥इतिश्रीहितउपदेशनितिसारेमि
 नलाभकथाहृदितियोध्याय॥३॥ताहाप्राप्तवविग्रह
 पपरेवाकारजाभरुहेपरेवाहोयेसकोरणलेमभरु
 रिकराकालोभलेकरोहिउछोवाहाराभडाजडाहामि

हस्तपनिमोला वाक्कालो भलेहा प्रोत्रीठु को नासु हो
 लासर्वथा विचारनगरिकन कामगर्तु है न क्या अर्थले
 न न्या निमगरि पका या का अंश गराज्जोन दोषु कर्म
 या का छोरा सा सुससु रा स्वामिका आ गामभला का
 स्त्री जन्म एक मनगरि सवोग गयो का राजा म नले विचार गरि
 को ल्या का करो वृत्ति विचारि ग्या को काम के रूप नि निगा
 रहु है न भराइन सव परे वा को फौद मारे क पर वाव डो अ
 हे का रि र है छरत स्वरवाले भ छहे मा हारा जते सो क
 आ ग्या हु छु क को म वि लि ग दु सु न ह व स क सो भ
 न्या वृद्ध काल मा वि पाति पडा उठा का अर्तिले वेव हार
 गर्तु भन्या का छरत सर्थ सर्वत्र काम वृद्ध हस्त का वचन ले
 गर्तु भन्या ता भोजन का पति दु ल भ हो ला ये स सहा मा
 अन्त पाणि आदि गरि सर्वत्र स काले व्याप्राप्ता का छ
 न सकान भया को ता के हि पति छे न सै का को विदा
 करे पति ह वै न छे रे सै का ग या हस्त को के ले काम पु गे न
 त स थ छे रे सै का न गर्तु स वै सित दू ग न द यो न भया का
 सदा असी तो कि व डारि सा हा सर्वत्र सै का मा न्या परा द का
 भा ग्ये ले आ प्रा न्यु पाल न्या य सता मनु अ क न व डे दु वि भ नु
 यति व व न अ हं कारि परे वा को रु रि क न स वै परे वा व्या धा का
 वा कल छ रि रा व्या मा जा इ प न्या वे रै धर्म सा स्र ज न्या का

भयापनि पुन सुभाका भयापनी सेवे ससय आफालमा
 भयापनिलो श्री भयापदि डुरवै पड्यारहे छ वावलमाधि
 सेवे परेवाह सुवाक राजाइला गपारवा धाको जालमा पयो
 ताहापदि जस्को ववनले वावलवान अनि गये थो डुर अह
 कारि परेवाक रा अरु सेवे परेवाले गालि सगपु गर्नला गफ
 तववहु तैलोकमा जान्पाछु अनि येकलो अधीस रि केहिकाम
 गगु कया अथले मयाका मय रगयाहु दि सेवे कएग
 सविन्द छ विग्रन गयापदि जो अदि स रि को ल्छ तसे का सि
 रमा मावे लाग्द छ ताहा प्रात सेवे परेवाले यक हदी गरि अहका
 रि परेवा कए गालि गर्नला गपाको गुजा चित्रगव परेवाले सु
 निकएग आगपा गर्नला गपाहे परेवा हो येस्क न क्या नति सिह
 हस वैयक धुगारि गालि गर्नला गद छे काम भया आप
 हापदी मा सेवे कामि नपनि सगुहु रगा छ दिहात क्या छ
 भया आफ्रि आमाको डइवान जा समापनि बाछा कन
 गाइका पा हुस गुरुन गाछ जो गपानि छ रत रह रुने ताक सैक
 न आपहा पर्न गावस्ता पनि अस्ते डुवा गर्न सक्यो छ स्क
 न बुलो वरु हो अनि जान्नु मुखले मात्र जो लोका वार मा
 गर्दछ तेस्ता कन मित्र न भनु वियत कालमा अल्मात्मी
 रुमा कनका त भनु तस्का रा वियत कालमा विमै भै
 कन उधारा को बाये सोचन गुरु अनि वडा वडा सास्रमा

भन्नाकोछु वियतमाविर्मेमाहुवर्तिकलाभाक्याग
 नुसभामासिलसोभावलेबोलनुसंग्राभमासुरेभैकन
 पराक्रमगर्नुअसमिलन्याकाजमाइहारवहुसासुसुहा
 माचितलगाहुनेयेतिकरेजोछुवडाकासोभावमानहुव
 डुरवडाडुरवेहाइमान्यासुसमानवर्मासंग्राभमावेभै
 भैपराक्रमगपरिस्ताछोरजन्माहुन्यामहतारिकदावि
 रमात्रैहुहुनसानालेपनियकमतोगरिकामगन्याहुदि
 दुलोकाभभयापनिनिस्काराहुनसकछुनदिसुहातका
 छुभन्नाकावियाकाडोरिलेमताहातिपनिगाधिएवछुन
 तस्कारासवैकायेकैमतोगरीस्केपलुआकासुवानीगर
 भन्नासोहिवचनसुनिसवैपरेवालेस्केकाकेपगारिवित्त
 गर्दीभन्नातवराडावित्रगुनभछुनहेपरेवाहोमयकज
 रोजदेछुसुनमेरुमित्रहिरन्यकनामगन्याकायकमुसाछुन
 गंडकिसावित्रवनभन्नाकोवनभावसमाकाछुनतवातिन
 छेछगयादेविहाप्रापासासवैकादिदिनभैभनिकन
 विचारगारिसवैपरेवाहुरुजालसहितमारीगयारिहरे
 न्यकमुसाकाहुलादेहुपुनगयाहिरन्यकमुसा
 लेपनिकदाचितकटेवातआपदापलकिभनि
 सकालेयकसय१००मुखभन्नाकोहुलोहुलपाइ

विववराभा वसीरला का थीयातवपेला उडिउदि
 आयाको सदसु न्या एहिरंयक मुसातेहि सदका
 उरले आ प्राघाडुला मित्रपसूनगयाताहप
 छिपेरा का रडा विववुवलेते सरडुला का पुवेमा
 गहाक पा नलाग्पा एभन्छर हेमित्रहामिहरुलाइ
 देखिक न भला कुसा रिक्या नग नुभयेन न सहीर
 न कमुसा मित्रका वचन को निविनित न विजगारिड
 लावाट निस्की वितीगदछ रहेमा लयज हनुका
 वोलिउहरा उगुनसकि पोहोर हनु ररहाछे धन
 धन मेरा भापेले दर्सन पाआ मेरा घर पवित्र आज
 भयोता हा प्रात विववुवपेरा का रजाले मित्रसै
 ग विस्तार गर्न लाग्पा हेमित्रहामिहरुलाइ पूर्वजस
 आगन्ना का पापले येकतापेरा को जो निभयो दो
 ओपापिष्ट व्याधा का जालमा परि रलाछे यो क
 छ कौना विधिले जनाइ दीनु छु रोगसाक सनापुवंध
 कलभन्या का पूवजनममा गन्धा का अपराध का भोग
 ले हो जोइ शलाकुनु सो फल यानुपर्मा रहेछ भन
 वडो विष्णु समा निभुसाले आफ्ना मित्रका पन्धनेका
 हुन कन आधिसन्योतवराडा विववुव मित्रसग भ

सुखेयसोहइअधिकोहिमेरआधममा रह
 पाहुरको पासाकाटिदेहुतवमेएपासाकातिदेहु
 लाभ~~भ~~तवहिरन्यकमुहोविदिगछनहेमित्रमेर
 कलथोरैछडातपनिमेरकमलेछनतसर्वलेसवेका
 पासामैलेकाइनसकन्याछेनतस्कारणादाहुतजपा
 लआधितिआपासाकातिदेहुपछिजातिकाहूस
 केजाततिकाटिदेहुलाभ~~भ~~तवचित्रगुवपरेवाका
 राजाभ~~भ~~छनहेमित्रदेसोभयाजतिसकछेततिकाटि
 देहुहवहपछिवाटमेरपासाकातिदेहुलाभ~~भ~~दा
 हिरन्यकमुहोविदिगछनहेमहराजयसोभन्या
 कोछकसोभन्यापैहेआप्ताआत्माकोरक्षागर्त
 पछिपरआत्माकोरक्षागर्तपैहेभन्यागआ
 पदार्थधनरक्षेदोरपीधनैरपि॥आत्मानसत
 रक्षेदोरपिधनैरपि॥१॥पैहेआपदापलकि
 भानिबनकासीचयगर्तपछितलवनलेखीरछेए
 क्षीकोरक्षागर्तछोरलेरिखेलेआप्तारक्षा
 गछेछनभन्यापनितिहुकोभजेआप्तारक्षा
 भर्तवदि~~छ~~लागनुभन्याकाछनभ~~भ~~दातनफेरि
 चित्रगुवभ~~भ~~छनहेमित्रहिरन्यकतिमिसा

स्र मापन्याकाछनतापनि आफ्र आ अयमारुता
 हल्लेवहु है इवपाहु सु सहुनतसकि नपारेहुनछक
 सो भन्या ग्यानिजन मनु व्यलेखले जिहुव वीकित फनिपा
 उपकार गनु भैछु तस्करा येसस सारमा थी ग्हु
 लाइकनपनि उपकारगु भन्या कोछ तसर्थ इनहु
 लेमलाइ धनजगाम बा वलमिलाइ कनरा जा भनि
 मानिए व्योछ नसे सेवेला मैले इनहु रुरु कोर सारगभ्या
 तामे ऐराइ कसे गरिहला मैले वाचनु पनि विकार हो
 केहियारु नपायापनि मलाइ इन हल्ले छेडे रमहे
 मित्रवदमे ए प्राणा त्यागहु सर मेरा आ अयमारुता हल्ल
 कनजियाव नेपछि हो मेवहाड मासु लेव न्याका मल्लु पुत्र
 यस्तारारिहो कल्पा तरहु ना गुण हो भन्यारय
 तिव चतराका सुन्या ए छि वडो हव माने सुसि भै
 हरिन्पक मुसा विविगछि न हेमहराज तिनि धन्य धन्य
 ह्याछो सेवक कानि मित आफ्र प्राण त्याग गन
 सकन्या तिनि पसारजा कन त्रैलोक्य कारजाइ
 जोगपछ भनि हरिन्पक मुसाले सवै पासाका टोदि
 याताहम छि सवै पोखा कनवहुतै आइय भाव
 सित मातागारि एजा विजगदव थाजि विविगछि

होमिअ आफ्राउदिनहुनालेतिमिहुरुसवै जालमा
 पयोअंवउप्रासगपानिमार्गमितहेछिअिपाकला
 गुहोलाकस्तोदेवनपछिअन्नाजोपीदिछनतिनि
 हुरुवारसयजोजनकाअन्नाकोआफ्राधानाआ
 हायदेविपाठछनआफ्राकालआइपुज्ज
 नजिकेथापिरअन्नाकोपासापनिदेवदेवतसर्वय
 मससारमासवैकनप्रतिजालनागर्तुअन्नाचरुचुवे
 कम्मनिहाहुलेपिडागम्माकोछहातिनागपनिवअन्ना
 पन्नाकाछनयकासमारहन्नापीछिहुरुलाइपनिदुख
 बरिपरिआहुन्दाथाहपाठदेनथ्याजलभिअवह्मण
 न्नुहुरुकनपविमार्हदन्तसर्थलेकालकोमुखाभी
 मुमतिगुनीगपानिछुअनिहुदेनतस्कारगलेसवैचाहि
 कुलोभाविहुनअनिजाअन्नुहमहारजयसिद्धोभलेविनि
 गन्नादुरवन्मान्नुहवसअनिहिरेन्यकमुसालेससातरहमि
 तमित्रकसाउमाइअंकमालगारिमित्रकनविद्यादेवी
 जग्वराजालेपनिमित्रमाउपकाआइयभावलेकन
 आफ्रादेसमागान्दाअयाहिरेन्यकमुसापनिआफ्राध
 रदुहाभित्रआन्दाअया॥५॥इतिश्रीहितउपदेस

नितिसोरेमित्रलाभकथाह चतुर्थो ध्याये ॥ ४ ॥ ताह
 उपास्यो वृत्तात सवैल ~~पत~~ नम्याको काममे सुन्या
 हरिनि कमुसा धाजिगे कन विस्तार सो ध्याया हो हरिनि
 कतिमि धन्य मित्रग नाला इ कर सुखो मैले पति सिमो स
 तमित्रल ~~हु~~ बाको इहा भयो तिमिले फमि मित्रमा एका
 इहा कपाश ये गृह वर भद्रत व हरिनि कमुसो आफ्ना
 घर डुला वार भद्रत को होर क ता वार आया को होर
 भनि हरिनि कले भद्रत लघु पतन भन्याको कागम हु
 भन्यो र डोला मित्र वार हासिक न हरिनि कमुसाले काग
 कन भद्रत तत मेरा स गुणो होर तसित मित्र वारु कसो
 गरि होला कयो हो भन्या स सार विचेर स सित मिलाम
 हुन्छ तस सित मात्र मित्र ~~ग~~ गर्नु जो गे तसित कसे ग
 रि मित्र ग र होला तेरा धाना गे हुता नई आफु ज्वाइ
 वा न्या सित को दृष्टि कसो गरि हुन सकल ~~क्या~~ अथनि
 भन्यो मरु ~~ले~~ रपाल सित मित्रलाइ कन भद्रत लाइ
 सामा पारे यो तसे कारण हुन जाना भन्यो र वल घुष
 तन कागले को कुरे कसो हो कहनु हवर भद्रत हरि
 न्य कमुसो भद्रत हे लघु पतन काग यो कुरे म कह
 छु सुनता हा प्रान्त ये कमुग घ भन्या का देसमा वं प

क नाम भन्ना का येक नगर थियो ते रनगरमा बहु
 तदिने हे विषय पुति सित सुगर काग इति इ इ जना
 वस्या का थिया येक दिन ता तपो मरु गर का ग वन भिमे
 वहु गै केत पुष्ट भै कन फिर मा रमा लले देये धर
 मन मा चित न ग र्जला गे पा क सो गारि तपो मरु गर को मा
 सुवान पाठ ला अव तपो मरु गे सित विचार ग र्ज पत्तो
 भनि अधिसारिक न मरु गला इ वो ला रु न ला गे हे
 मित्र कु सल हो भन्पो र न व मरु ग भ र्छु त को हो र
 क ता वा र आ इ स भन्दा स्पाल भन्छु न मरु पुष्ट उदि
 भन्ना को स्पाल हु विना मित्र न भै य र वन मा म न्या ज
 सो भै र ला रु ओ नो ति मरु र्छु र पा जा र जे ओ ज न्य
 भन्ना ज सो ला गे अव रु प्रा र ति मरु से वा ग र्छु भु
 नि पा छि हि ओ से वा ग र्छु भनि स्पाल ले भन्दा भन्दा
 श्री सुखे पनि असाया चल पर्वत पुग्नु ला हा पो त ज
 मु क का रु वे जना च पा का रु ख मनि मरु वा स व र्पा का छ
 वे मा पुग्नु पा र का ग न र्छु हे मित्र तपो डो श्री को हो र भन्दा
 मरु ग भन्दा यो स्पाल हो हो मि ह त सित मिला मरु र्छु भनि
 पा छि पा छि ला गि र हे र्छु भन्दा सु उदिका ग भन्दा हे मि

त्रकोहि छकस्मात्मानिलन आहुम्पा सित विचार
 गन्पाहि इन जस्का कुलरित्त सो भववानि वससाव
 साको छन तरेता कन वासपनि नदि न कसो भन्या वि
 रालावे पुछा गृध्व क न मराये ध्यो रिस्तै वे होए हुन जा
 ल्य ॥३॥ इति श्री हितोपदेशे नमिसोरे मित्रलाभ कथा
 हा पूर्वमो ध्याये ॥ ५ ॥ ताहा प्रात मृगा कोण २ का कुए
 हुं छे हे मित्रसुं पृथ्वि कागयो कथा हु कसो हो मलाइसु
 नाउनु हुवस भन्यार काग मरु हे मित्रसु नु हुवस भनि
 कल नलाग्यो ताहा प्रा तयेक कोहि भागिरथि भन्या का
 गंगा कातिरमा गृध्व काक भन्या यक पर्वत धीयो तेस
 पर्वतमा पुर्वरु न्य भागन्या का पातक ले भोग्ये न मिमितवु
 भो माव वन्या पै छि हुरु ले आप्रु आप्रु भाग्ये देखि अलि
 अलि श्री के तेस गृध्व कन अहाए दिधो त्यागृध्व तेति
 आहारा वाइ केन प्रतीमान गरि ह्य को धियो तेस्ता सह
 सित रह दावेसु बहुत दिन विन्या पछि येक दिन ता सो
 दिष्ट कर्न भन्या को विरालोला मला मा गुं धाका न भयो को
 आयो ए पै छि हुरु का दोरा छोरि वा न तेस रुखान वस
 न गयो एत वपै छि हुरु का दोरा हुरु ले सो विरालो आया को
 देखि कन कल मला उ नलाग्यो आ वा गुले दोरा छोरि

कलमलायाको सुनिकन ग्राहको आयाको छ भनी
 भद्रातवदिर्घकन भन्नाको विरालाले गुरु अर्घ्य
 कनवहुते डुरमानि भान्नको पनि ओसालेन र भ
 छ भन्ना विलेले आको माछे सा होला तसै गुरु
 धर्मितामिलगुपयो भनि विवाहारि भन्ने हेमा
 हा पुरस्स तिमिकन भन्ना गुरु भन्ना विर
 लाहु भद्रातवगुरु भन्ना विराला जोती आहा कमान
 आइसु बाडिओरि आना भया जा जान्ना सर भन्ना तलाइ
 ममाईछु भन्ना विरालो भन्ने हेमा पुरुष यस ससार
 मा मान्य जाति भया पनि सवै कन मान्य छैन पुजागन्या
 जाति भया पनि सवै कन पुजागर्ह नकसो भन्ना सवै
 कावे होरा गुरु मान्य किन मान्नु पुजागन्या कन पुजाग
 न्त सवै मात यस ससार विषे गंगा कातिर मागे निष
 अष्टागुरि माछा भासु छाडि प्रह्व बाछ्ये बद्रायन गारि
 वसिर लाछु तिमी वज्र धर्म त्मार लाछो भन्ना कुरा सु
 नि पायार मैले वैसले पनि ग्फानले पनि तिमी पुकाछो
 तिमी मुखवार धर्म कथा हा सुन कन वडो इहा भयोर
 म आहा आया काहु धर्म त्मा ग हस्ता का धर्म यस्तो होइन
 सत्रु भया पनि आफ ना सर नमी आउ न्या कन पुजा आइ

यभावनागारि राखनु यद्व दृष्टा न कजा दुभन्या वक्षभा
 फुलाई काट नभाहु न्यामनु ध्या कनपनी छाहाति सितलो
 गरइ गुप्त दृष्ट तसर्थ सजन का धरा गया पादि वदनलाई जगा
 रोप वनलाई पानी ताकाहि गया धनी मिलि दृष्ट जस्तो गरि
 श्रीचन्द्रमाले छोटा वडा कत वरोवर लागी दिन्दु न तस्तेग
 रि धो मारयनु पर्छः भनी विरलाले विंतिग न्यार तव गृध्र
 भन्द तेरो तामा सुखान्या जाति हो आह भन्या पाँछि हरु पं
 छोका छोरा छोरी हरु छनः मैले भन्या को हो भन्या तस
 विरलाले कान छोई कन हारि हरि भनी विछु का स्मरण
 गरि भन्द हे गृध्र राजर्षि सास्त्र सुनी कन ता सवे तहना
 मानु पर्छः तसर्थ मैले सवे सास्त्रे हरि सवजा को दुः अ
 हिंसा वरोवर बुलो के ही रहे नछ सवे हिंसा देखी फरकर
 हुन्या सवे कन आश्रय दी न्या यस्ता मनुष्या ज्ये देः
 स्वर्गवास गर्छनः तव यत्न सन्सार मा जन्मी मरण भया
 पाछिः ले जानु यक धर्म मा नछ उपर आह केहि छैन त
 स्कारण जो जो मा सुखान्छन् भान्या का भन्या यक
 पलक मुख को स्वाद मा न होः युवा ठन्या को तापान त्या
 ग भे जान्छः तस्ते पारि कारले गरि हेर्नु हवसः वन मा सो
 क छन्दले उव जन्मा घास पातले पानी पेठ मा जान्छ
 भीत्र का अग्नी दलो गरि राख्या यस पेठ कन को नीको
 पाक गरो स भनी यस्ता ताहले पत्त विश्वास गरि कि
 न तेले रुख का ठो कामा विरालो वदन जया तसै के रै दि

नपदिहो विरालले धर्म होदि पंदिह रुद्र का बोरा होरि
 यक डुगु गरिदिगहि यागुला गोर पंदिह रुद्र ले थाहा
 पायार जो न नालागु विरालले वो नगर्नलाप्यो
 भनि थाहा पायोर भव काम विगो न विरालो हलो
 हलो नो स्की कन भागिगयो पंदिह रुद्र ले जाहा
 ला सवेडा नो न दामि आफु रुद्र ले पालि राखा का
 गु ध्व वस्पा कोठा नो उग्या होरा होरि रुद्र का पो
 वदेष्पात वपंदिह रुद्र ले भव नालाग्या हासा होरा होरि
 रुद्रान्याता योगा पियु उ को गठ करहे रुद्र ये स्वन
 पालि के हि प्रयो जन दे न भनि सवे पंदिह रुद्र मिति उ
 हो गृ ध्व क न माया ॥ १ ॥ श्री श्री हितो पदे स
 नितिसारे मित्र लाभ क हा व ह मे ध्याये ॥ २ ॥ ताहा प्रात
 तप सुगु ध्व कागु भव रुद्र मित्र रुद्र ये रुद्र कागु ले कुल सि
 ल न ज्ञानो रुद्र सि त रुद्र क न का रुद्र दि न भव को हो
 ये सि रुद्र को वृ तात कागले भव को सु नि व डोरि स सि त
 जम्बुक भव रुद्र कागले पु नि रुद्र मि त रुद्र भव को दि न ते रु
 कुल सि ल मि गले का हा न्या को धियो ते नि ति मी रु का रु
 लो प्रिति रु न गयो भनि स्वा ल ले भव रुद्र रुद्र भव रुद्र मि

नकागले नीमिनि नै नूना सुषसीग नाना हरु का कथा ह
 गरिव ~~है~~ नकागले मनमा संकोरु मा नै मग कन न
 छे हिम न ये सवन छे उमा धान ले गु क भया का सेत छे नते
 सैवेत माला गि नाम होला मैले भयाको नपान्ना हरि मेरो
 कोहला गे न मन पया को गुर भनोर उपला ~~रह्यो~~
 गहपा छि मग कन स्याल न छे हिम न ये सवन न को छि
 उमा सेत का धन ले गु क भया को छे पो धान देखा द्दि
 छु हिड्म निडा किल पो सेत मा धान वुवा हुन पल्का
 इ दियो मग पनि पल्कि सवै खान जादा येका दिन
 ता सेत का धन ले देखा धान खान्ना ता मग पो रहे
 छ भनि सेत का धन ले पासो थापि राख्यो सेत को धनि ध
 रगयो मग पनि सवै का केला मा धान वाम आयो त्यो म
 ग पासो मा पयो पासो मा पया पछि मग भन्छ हे देव
 यो मेरा पासो काटे दिना विधाता को होला भनि
 आ प्रा मन मा चितना गर्छ भयो ताह पछि जमुक आ
 यो र देखा तम जमुक भन्छ मग पासो मा पछि मैले
 कपत गरियो मग सित मित्र लाया था अब मेरो म
 नोर छ देव ले पुया दियो सक्या आ जय मग को मा
 सुखान पाहुना मा सुखान न पाया पनि हाड पुसल

तकराची पाउलाहु भनिवडो हसमान भै मृगकन
 भनलापो हो मित्र पासामापरि रसाछो वहु तेवलग
 ठहवस पासामा फुलाकाछ र मदातेव भुगले जमु
 कदेसिवडो छांसये भानिकन मृग भव हे जमुक
 मित्र विपतिकालमा मित्रकन पुजुं सुरार कोतर सै
 ग्राममा पुजुं सै जतिसा किया मा स्त्रि नको धर्म
 पुजुं आफुकन कष्ट आयस पन्पामा भाइव पुजुं
 भनिमृगले भन्यो जमुकन बालि दुपलागिर सो
 मनले भन्यो मृगसा हो मृगपासामा पमे छ किपेत
 भनि पासामातिर वारु हे देहा थो पासामात सौहो
 रि पन्पाको हे छ भनि मरमावहुने वृक्षकन भव
 हो मित्र नसाले वाधाको पातो हे छ आज आदि रूपवा
 हो मे एवत छ डातले काइ नहुदै न भोलि सेवै काटि
 दिउला भन्यो ताहा प्रात भोलि विहान भयापछि
 मुगुद्धि काग भव आज मित्र आयेन कत गये कया
 भयो भनि ववर गजाइ मित्र पासामा पन्पाको देवि
 भव हे मित्र तिमिकन तेसो कया भयो भनिवडो वि
 या उओ भि भव नो कोहि आफन हित मित्रले भ

न्याका वचन मोहैं न तत्स को विपति न जिके आइ प्रपो
 भगि जाहु लो मित्र कृत हर्ष दिग्ग मित्र कन कलप
 उ न्याहो भगि विग श्रय गा न्याहो मित्र यो जन्मु कक
 तागयो मैले ताइ से दिन न न्या थ्या म कन अपराध
 केहि छैन से सासित विस्वास न गर्नु हवस न्या थ्या
 अपराध मित्र विस्वास ग न्याहो दिग्ग निशानि कन पनि
 हुलो भय हुन जाहु तव स्पाल कन काग न छहे पापिष्ट
 स्पाल कया नैले से सो पाप कर्म गरि स मित्रो व चहा
 गरि वागि आ प्रवस म ल्याइ आस य धन्य कन अधर्म
 गर्नु जोये होइ न आफु उपकार ग न्या आफु सित आफु ज सो
 त्रै विस्वास ग न्या सो जे चित्त मा मनु व्य कन जो अधर्म गरो स
 लो अधर्म कन हे भगवान पु थि वि ति मी क सो गरि उ धार
 गर्दि छे अधि आइ कन पाव मा न्या पिछ्या परिवा न्या कन
 देउ आइ कन नाना गरु गरि मधुर वचन वेल न्या धितन पाहु
 ज्पाल वडो प्रिति गरि वृष्टा से स्ताहु र्ज न को सो भाव हो भनि
 जानु ताहा पछि प्रात काल भयो र ते सखे त का धनि हात मा
 लागे लिये र आया को कागले देओ र मृग मित्र कारा भद
 हे मित्र भैले तिमी म न्या ज सो गरि रहतु हव स र ज व मैले
 सब द गारि वोलि दिहु लो ते से वेला मात ज विज गरि छुठि

तिमि भग्ना भग्ना कसुग वृद्धे माउ दिवस गयो
 ताहा पछि वेत का धनिले टाढे पार देघार भन्ने
 आजता पो पापि पुरु मृगया सामा भरे ह मरि पत्रिग
 ये ह बनि आइ मृगको ~~न~~ न कारि दि कन मृग
 परसारि कन राख्यो अरु पांला सरे न लाग्यो तेहि
 वेर ~~मृगको~~ मृगक न बर दियो तेहि सबद सुनि मृग
 उठि भामि गयो कोरि कन वेत का धनिले ~~मृग~~ रोह
 नि पग उदा मृगलाइ नला गिलु किराहा को स्याल को व
 परे माला उठे बोदले पापि ह स्याल मरि गयो तव यस
 मसार माति न वर्कति न मेह ति न पेछे ति न दिव भिन्न
 पापु न ह वर स्या पनि दुला पाप ह वर स्या पनि ~~मे~~ सै जन्म
 मां युक्त मान गर्नु पर्छ ॥ १ ॥ इति श्री हितोपदेश मिति
 सोरमि बला न कथाहा सप्तमो ध्याय ॥ ७ ॥ ताहा प्राज्ञ
 हिन्त्य कमुमा भेछ देज छु पट्टन काग विज्ञा एगु मुन
 कसो भन्या भक्ष भक्ष का प्रिति छुदै न भनि जाछु भन्ने
 लक्ष्म परने काग भन्ने भन्ने भन्ने भयापनि छुदै न तिमी
 कन मैले आयाले मेरो भरि पुर्न हुन छुदै न तस्कारण
 तिमा जिय कुसल हु जाल मपनि जु लाग तिमी लाइ त्के

ह्यपन्याकोदिनमा मपवितिमुकारागमा प्रागत्याग
 गरुलंगेहेधमुत्तिमाहिरुपकमसो गी विवमवसंगपि
 तिमिल्याकाछेतसैतिमाहाम्रापवि पतिहृदा कसैति
 डर वचलभयापनिमित्रसितकपतस्वेनतवफोहिरुपक
 भद्वहलद्युपतनकागतिमिवहुतेवचछेतस्तसो भग
 पो सितअहनेहगर्वकठिनहुहुकसोभन्याजोकोदिच
 न्वेनसोभनगर्वाहुतेस्तले आफनाकाप्रसाध
 गर्तसकैतससर्धअहकोकोमक्यागर्तनतसालेतसवे
 काप्रविगान्धामात्रहुनभैसिभेडाकागकठरपेलिसि
 तविश्वासगर्वाकातअधिकारहुनजान्दकसोताहसित
 मित्याकाभयापनिमत्रुसितनमितलनकस्ताताहसित
 लेभन्याहुदिआगाजोभिगीतहाकापातिहतापनिआ
 गालाशनिभाहुहुहुनसितपनिमित्पारिनलाहुनुस
 पदिविपनिहुलोभयजानुपस्ताअनुविस्वासिहसित
 एलाभयावहुतेकठियाहुहुजसोगरिधपानिमाच
 लेनजोकोहिमनुय्यआफ्रासत्रुसितविश्वासगर्वा
 आफ्रासितविरक्तभयाकिस्वाह्मीसितविचमगर्वा
 तेस्तामनुय्यकोकालनजिकेआइपुगोभनिठानुन
 पोतवलद्युपतनकागभद्वहोहिरुपकतिमिले

भन्पाका विस्तारसकैसु मातीमीसीत मित्रगैतैरु
 हुदैत भन्पा मैले अ भन्पा गैतैरु डिति माद्वारमा प्राण
 पागगीरु हाडुला कसो भन्पा माटाका भाडा केरु न
 सभिलो हुदैत नैक विनहु हुत सैस जव भनु स्यासित
 मिलतु सहजैरु हु न सित कोटिग स्या पनि सज न मिल
 न सभिलो नैत कोटिग स्या वडले सज न का सगगनु पद्वि
 कसो भन्पा मित्रका धनमालो भन्गनु मित्रका निमि
 त धनपनि पागगनु सुव डुव माव एव मानु मित्र
 सित जासि मभिमि विवधु पुति वडा हुनु सत्य वचन वा
 लनु येति गुन मित्र काहु न्यस्ताग नले गुन भयाका
 मित्रम काहा पाहुला भनिल दुपत का मले भन्दा
 हिरेन क सुतो आप्तैरु डुला वाट निस्कि विस्तारग
 हुन हेल धुप नैका ग अरत जसो तिसे वचन सुनि
 मत्त पित भया हेप भुधा मले पिबित भयाका प्राणि
 कन सित नु जलैरु हुना गज द माप नित तिका सितलो
 हुदैत मोतिका माहाल गाइ अंग प्रा श्रीरु डले पनग
 द मासितलो भयो भन्दा पनि स्या दिति माव वन सि
 तलो मत्त पित भया नि हिरेन कले भयो अरु विस्तार
 र पभो फेरि भन्हु कसो भन्पा य का समो ग स्या
 का कुरे वाहि रजानु गगनु मित्रला इहल नु कठोर

वचनबोलन विचरचलगर्ग रिसर्ग रिरुग कप तगर्ग उका
 वेतन येसिका म अलाम न खेलेन गर्ग तस र्ध तत्रा वचन
 का अगुसार लेता सिमिक नय के डोव पाने छे न भग्या अ
 भीलागु फेरि अरु पानि भन्द छु क्या हो भग्या दुर्जन लेनि
 मल विचरगी कोल्पा का वेवस्था भिन्न हू छ तस्कारण अ
 वतिप्राम नको काय्ये संपुर्ण भयो आज देखि तिमि मेरा
 मित्र भयो भनि हिरे न्य कसु साले नयो एउसे दिन देखि यु
 जना का प्रीति कहै देगयो ताहा प्रात हिरे न्य कले ले छु पत
 न का गर्स ग मित्र लाइ कन भोजन ले मंतु छ गराई दुवै का वि
 दावा डिमै आफ्रा आफ्रा अवस्थामा जादा भया ताहा प्राभ
 दुवै जनले आहा रादि कुल प्रष्ट मरि नाना देम का कथा हा
 गी र हवा बडुत दिन वित्या पाछि एक दिन ज छु पतन
 का गले हिरे न्य क कन भै छ हे मित्र यम्यामा पडा कसु स
 ग आहारा मिले छ र स थ योगा हु छे डि अंग जाना का मन
 गर्ग हव स भन्दा हिरे न्य क भन्छ हे मित्र अवका हात्रा हु जो
 को हि गुनि शानि हु छ सोम गुय्य एक पावे तकि हि डद छन
 तस्तै तर हुते डो ओठा रुठे गा नाव भै क क पूर्व जन्म का वा
 स नाव छे ड गुत व हिरे न्य क भन्छा हु कोठे का हा का हा ग
 र्ग भया को छ भन्दा त कल छु पतन का ग भन्छ हे मित्र डै डका

ररावगा कपटजै भना सखन नमा वहु ते दिने दवि
 उपाजिरावपाका मीथाना उगपाका कछु वाहन
 तेस जगामा आदिमल जंतुले हामिला ५ आहुरदि
 हामिडुइक नवाल न्याह न भदाहिर्मक भदहेमित्र
 मपनि आहुरवसिक्याग हिला जसदेसुमा आहुर
 मान आइये भावना मयेन दाजु भाइहून तसदेसमा
 आनिजनलेवास गपाको केहिप्रयो जनहून तस्काए
 मलाइ पनिसाथले जागुहवस मन्पार हिर्मक कलछुप
 तन डुवैमित्र पुर्विलोक थाहवाता गदै तसलवर
 बनमा पुज्जार मीथाना कछु वाले देवपार मित्र आयो
 भनि आहुर भाव नगपात बल छुपत तकाग भदहेमि
 नमैधर हिर्मक मुसो भन्पाका इनेहून इनका गुनको
 स्तुतिगनकि राडुइहजार जिभ्राभयाकाना गलेपनि
 नसकठ भनि विग्रह वपेराकार जाला ५ उजकारग
 पाका कथा सवैकान्त मीथा कछु वाकन केहोए वहुते
 धूसरैवडा हवीसित आहुर भाव गपायतिसकि हिर्म
 कमुसाह्ने मीथा कछु वाकन हेमाहात्मा हिर्मक
 येस निर्जल वनावेक कटिका मचलाइ गर्ग भयो आ

पागर्भहृत्सु भन्ना हिरेन्यक भन्ने हे मित्रं धरु
 नु हवर्त्ता हा प्रातर्चनं पुर भन्नायक नगर थियो तस
 नगरमा सन्नासी हुरु वल्गा करायक वडो धर्म साला वगाया
 को थियो तस्मा चडा करण भन्ना का सन्नासिले भोजन ग
 मापछि वाकि एना को सिय अनन्त भिधा यात्रा मार विव
 डा उच्चा ठाठु माल गिसदा सर्वडा राव डोर हे छुत्पा अनन्त
 मैले भुमि देवि छि फ्रि कन माथि जाइ नित्य याइ आठु था
 यक दिन ताते सै सन्नासिका प्रिया मित्र अविकर्ण ना
 मगन्ना का सन्नासि आइ पुग्पा एति दुवै नना सन्नासि हुरु
 रात्रि मा ना गारुका कथा हा कौवा ता गर्नला ग्पा ते म
 धुला मा मैले वान जाइ सन्नासिले देख्यो अविकर्ण सन्ना
 सिक न भन्ने हे हे मित्र मैले ते स्ता अगला ठाठु मार थाको
 तो अनन्त देखि कत तौ सा नामु सामि लि योटा का वाटु
 प्रिकन वाइ जाइ आस व्यो हो जाहा ता केहि का एग होला क
 सो भन्ना गो अक्स्मा त तस्ति स्वास्ती ले विना का एग मागु
 धस्वामि न अंक मात गरि डइहा तले दुवै तिका के ससमा
 ति चुम्बना गनो थोत स्तै आहा पनि केहि का एग होला भनि
 अविकर्ण सन्नासिले भन्नात वचन कर सन्नासिले भन्ने हे
 मित्र यो कथा हा कसो हो कहउ हवस ॥ ३७ ॥ इति श्री हटोष
 देस नितिसो संग्रहे मित्र लाभ कथा हा वरु मो ध्याये ॥ ८ ॥

ताहा प्राप्ति अविकर्णसंन्यासि भवहेमि त्रमनचितता
 इकनसु नुहुवसुगौ देस भन्या काकोरा विनामगन्याका
 येकनगर थियो तेसगरमा कुहादास नामगन्याका येक व
 निया रहेछ तेसवनिवा को छो रिलिता प्रति भन्या किधि
 इने तेसवनिवा दुध काल भयापछि काम चेछाले धनमता
 मैलित्ता प्रति छो रि कन कुल सिल भन्या का वनिआ का छो ए
 लाइ विवाह गरि दीयो तवति लित्ता प्रति भन्या कि अस्त्री
 थिइने भन्या सा हात लहि मेरु रजसा काम देख कन गिल्ला
 आनि सुन्दरि थिइने तवते स्को पुरुष पुठुहा हुनाले मन कोस
 तोव भयेन थो कया अथले भन्या सु रिह के पमान भया का
 प्रातिक न सूर्जे का ताप नि को मा नै न सार ले के पमान भया
 का प्रातिक न चद्रमा को ताप नि को मा नै न सार ले के पमान भया
 ये घटि दुध भया का पुरुष तरु रि स्त्री हर नि को मा नै न उठा पु
 रुष को तरु नि स्त्री भयो भन्या बहुते पियारि सित प्राण दुखै गी
 मानि एष छै ते पनि स्त्रि जन को मन पैद नत स अर्थ लित्ता प्रति भो भ
 नमना भे आफ्र कुल का माहिना पुरुष छोडी आफ्र पुरुष
 सग पलकी वडो प्रीती गर्नु लागी कोसे को दरु मानौ आ
 फ्र मायी निगे निसा ह्वा लो कजा नामा नमासाग
 नमाया नावे स्याइ छे आफ्र कुल धर्म छोडी हा

आकाशपुरुष भयो क्वा असूजन भयो ये तिका आयुर्द
 चाडौ छिन्न इच्छ तागु वल्लुवागु दुर्जनको संगगर्न स्वामि
 सितविर धगर्न विना काम मादु नगु नाहक पराडका घरा
 गुयेति थोक गरस्ते वचा ईवेलन सक छ इमिक न धन्य सत्प
 काडि हुन भु कसो भयो धुको गाग्रो अग्रिका नजिक
 एवडा गस्ते गरि चाडै पानी जा छु तस्ते शुगी जनको ह रु
 तस्कारण जो भन मता पुरुष असूजन पके हुने पनि सिमिन
 का पुरुष लेत प्रकै है पनि हुने तस्कारण य कदिन ताते सति
 लावतिले वतिया की छोए सितरत्न का पल ५० मा बडा सु
 वसित नाना तरु सित वसि नाना तरु का कथा हुना ता
 गरि वसीरत्न का वेला मा आ प्रा व्याहिता वस मरे लो छु
 आया का देखि उद पदा हुदै ठुठे गे क न अक मा लुगी
 हुवे हात ले आ पूरा वरम को पु पु र के के स समा सि वै
 बना लिनु तर सै ओर मा मा प्ररुष कन भगा इर त्यो व
 रिजग प्र को त सै लिला वतिके न गिक रहना कृतिले
 देखि मममा चित नागरि विना कारण तस्ति स्वास्ति ते वृ
 ध भया काले ग्या कन अकिमाल गन्या को रत जा कन चि
 हि आस र्ज मा भियो कारा ता सै वहु ज मा पुन्या हु हु
 भोग गे वि ति गरि न वलिला वतिके न डा कि लीमि डी आ इ न
 ॥ ५॥ इति श्री हितोपदेश निमिसो मित्रलाभ कथा हान
 वमो ग्या ॥ ९ ॥ ताहा प्रात अविकार भठपा का सीत्या सि

मन्त्रेण मित्रयस्य प्रसाले वलगातिप्रिकृष्टातेति अजला
 मागध्याक्य वा वलका इगयेतेरमाकेहि काराहेला
 नवतोटेनुप्रि ~~ह्य~~ नसको नवता खानतैकन्याहेइन
 मन्त्रनिह्व यगानि वतीले मुसापत्पाकाठठमायनिहे
 पाए मुसाकाधुन अधिदेवि संवयगी राध्याकोपायो
 तिसंन्यासिहसुले सुनेलुटिलिवातवठरुदिनेदेविभेरेवल
 उल्लाहसवेद्यह नगयो आहार योजिषानाकासामर्थभ
 येनतसैविहलेतेरागठकाटहलौहलौ भामिजाहभर
 तिसंन्यासीनेदेव्यासंन्यासिमन्त्रेह मित्रयससंसा
 माजस्काधनधरेह न तिनलियाहुत्पारलोह न हरेह तिम
 साकाधनहमिहसुलेलुटिलियुतिमुसोनिमलियोभेग
 योतसर्धधनहन्तामनुष्य शब्देनभयाका जोह न तिनह
 रुकोजमयेथोहो नस्तो गरिवेसावजेठमैरुमासाकारादि
 सुकिजाह न तसैरहे ह नस्कावहुतेधनह नस्कन ईह
 मित्रदासुभाई वन्दमवेलेवहुते आद्रये भावनोगारिमी
 दहचुनकारमा छोरानहुत्पाको धारपानिमु नहेव नु
 ईह मित्रनहुत्पाकोदिमामु नभन मुयमनुष्य जोह न त
 ह्योह दयसुत्पभनुदरिदुजोह न तस्कोदसैदिसासवे
 सुत्पहुह उहिइदिगहिधुध्वीप्रहिनाहुह तापनिधनका
 तेजलेगहिपुरुषभयापनि दिनामित्रमा अरुमाभिहु
 उजाह विधाताको वरिनु वडोआसवे हुत्पारहेह नोने

सत्पातिहृका च वरसुनि अवमैले आहुवद्व्याजोग्ग
 हैन अरुक्क न पतिविस्तावतात कहने छैन कया हो भया
 ॥ अर्थ गार्सी मनस्तापं येहु दुवारता निव ॥ वधनी चापमा
 पमतिमान प्रकासयेत ॥ ११ ॥ धननास भयाको आफुकन
 सीतापभयाको आफ्नाछाको दिहू आफुलाइ अर्का
 क्याको आफुकन अपमान भयाको येति कुण प्रकासु
 निज नमनु अले नगर्न ॥ १२ ॥ इति श्री हते पदे सनिति सारे
 सीग्रेहे मित्र लाभ क **आहुद** समे भ्याये ॥ १० ॥ ताहु प्रान क
 सो भन्ना मनुष्य कन देवता अतिविमुख हुन गया पछि आ
 फ्रापुख्खा र्थ सबै हुन गया भन्ना दारिद्र्य भैरहुन चाहित
 बन जाइ वस्नु वरुडिया हो अत्रिमानि पुरुखले आफुकन
 आपदाप त्यामा अरु प्रातिकरण त्याग गर्दछन श्री हत भन्ना
 कोछ कया हो भन्ना पानिले आगा लाइ पानिले सितनो हु
 हैन आगे कने पानिले निभाइ हाल्छे अत्रिमानि पुरुष
 को फुलको सो भाव्यै कहे को सो भन्ना के त सबै का सि
 मा चहि जाछ किता भैमा र्जा जाछ **ह** कारण संपटि नहु
 न्ना पुरुखले अत्रि प्रवेस गी प्रान त्याग गी हाल्नु र्ति को ध
 नस किय पछि सपत्तामा न देव्या का विपटि नित सैताइ
 आइ पदछ धन नहु न्ना कन बहुते त त्याग सर्म हुन जाछ
 पाकर्म पनि हराइ जाछ पराकर्म छटि गया पछि धिका
 हुन जान्छ धिका र भया पछि विद्याइ हुन्छ विद्याइ भ

याप छि सोक दुख सोक अयाप छि दुखि छुटि जा
 दुखि छुपा पाछि नासहु छे स्तादि नद सा नापा
 काम नु व्यले मिथ्या जवन बोलन्या चाहि न कोति रहनु
 निको परस्त्री गम नगर्त चाहि मेही भै रहनु निको अ
 क को विगार माव ह्वा चाहि प्राप्त पाग न निको पराड
 को धन मालो भगर्त वाही निदामा गि धानु निको अ
 रुका ऊरा मुनि वसि हुन्या अरुका धन ले को र्जन न पारि स्ता
 मगुष्य जो छन ते साक न विकार को भेन ताहा पछि जो म
 नु व्यस वै को र्गि स वै का पेद सि म ह्वा सर्व हा पराड का व
 न वा न्या पराड का घर गै सुत न्या यु स्ता मगुष्य को ज्जु नु प
 नि धि को र्हे होत स्कारा पाप भयो पुन्य भयो आफु ले
 कमा पाको जो छु ह लोक पलोक भावये वा पाहुनु छ
 भनि जानु ॥ कृ ॥ इति श्री हितोपदेश निति सो ए मित्र
 लोभ कथा लय काद सो ध्याव ॥ १५ ॥ ताहा पुछि मला
 इअ विकर्त ले कृपा का वास ले कृपा त व मै ले चित न ग
 न ता ग्गालो भि भर्स तो वि करे वर अर्का को दूहि गन्या
 अर्का को हिरे ह न छ क सो भ न्या ज स्म नु व्य सी तो क कृत
 स्क न स वै कृ ए को भापु न भया को छ भ नि जानु ज स्ता प
 है ला हु न्या गो डा ले पृथिवि स वै का मै ज स्तो मा छ त सै
 प रि का ले त हु नु र्सी तो भ भ या को वु तो प डार थ हो

भनिवृत्त न पद सौ तो क अमृत ले सौ तो व भैरव नाम
 नुष्य वडा हुन भनो ते स्ता मु नुष्य ले के हि विद्या नु जा म्मा
 का भयापानि सौ तो भिकन के ले पति आपद पडे न कया
 अर्थ ले भन्या धन का तो भले आ प्रग धरदा रस्त्र न न पुत्र
 सब ते जि क न हु गार को स जा नाला इ पति टा का म दे न
 त स्कार राय र स र मा मा धर्म भन्या को कस्तो ले भन्या इ वि
 क न दयारा स ग सु र व कार तो हु व स भन्या सदा स भदा नि
 र गि भैरव नु पा व स अछे त का स्तो हु न स भन्या सत मा
 व स ग व ह नु पं डित कस्तो हु न भन्या सा स्त्र का भेडा पा इ वो
 ल न्या हु व स य से पति भन्या को इ कुल माय कला इ छे
 डि र द्या हु न्या भयाय क छे डि दि नु कुल छे डि ग्राम कार
 द्या हु न्या भयाय कल पति छे डि दि नु आ प्रग आत्मा रक्षा
 ग न्या ला इ ग्राम ते नि आ प्रग आत्मा को रक्षा गर्नु भये नि
 हि हि ने हु न भै आनन्द सित र हु न पाया व हु ते क छि या छे
 भये स ग मित्या का हु ला व ह नु भया प वि निका हु न न भन्य
 भ नि म न ले वि चा र्ण छे स जित व न सा आया त म्मा अ व
 ये मा आ इ पु ग द के व ल से र ग मा पु ग्पा जति को मा नि र ह्या
 दु ये क का ष अ स्तर स चा व नु डो प्रो स र्जन का स ग ग नु
 भ द्दा त व यो क था हा सु नि म थ र क हु न भ द्दे मि न

तिमिलेवडोसेचनागर्भयोतस्काराधनहुपजाइक
 नतादानदक्षिनागर्भसक्याहुदिमात्रधनकासा
 रक्षाभयोभनिजान्णसोधनअलक्षयभनिजान्ण
 जस्तैगरिगदिकापानिनतिसुकिषगिगयापनिसुकदेन
 तस्तैहोभनिजान्णभोग्गेगर्भनपायाकोधनजोहत्तै
 धनतालोकेधनधारहेहुनन्नुपायाकामात्रहुनेत
 स्कारणलेवहुतपुयवयनेगादिहानदिनुशानिभैअहंका
 रनगर्भसुखभैक्षमाधारिहुनुधनभयापहिडाताहुनु
 योचारथोकह्मपानकोकाराहोवडाभोग्गलेमात्रपा
 उद्धधनभैकनदानपुन्यगयाहुदिताजम्बुककराधना
 काहुपालेआफुकनपराइभोग्गेथोभनिमीथाकहु
 कालेभन्याएतवहिरन्यकमुसालेभन्हेलेमित्रयोवृतात
 कसोहोआप्पागर्भह्वसुसोधाभया॥१॥इतिप्रीहि
 तोपदेसुनितिसारेभित्रलाभकथाहाहादसमोधा
 ये॥१२॥ताहाप्राप्तर्मथाकहुकालेविस्तारगहनदे
 केदेसुमाकह्मपानकतभन्याकागगरहेहुतसगएमाभै
 रवाभन्यायेकवाधाधियोतेसवाधालेयेकादिनताविधी
 चलभन्याकापर्वतमागुगफासिकाएगयेछरतेसुका

धाले
 पाठे
 मा
 न
 सा
 अ
 क
 सि
 अ
 त

धाले मृगमारि त्पा ५ न्दा वाय मा कडो नय क वने ल दे वि
 पायो ए त्पा मृग त्रि मि नू मा रा वि क न वने ल ले मि नि इ वे
 मारि ग पो त त्तै गी इ वे मारि ग या को औ स मा दि घ ए व
 न भ न्पा को घ मू दे फि र्दे आ मृ द मा ति इ वे यै क ज न म म
 मा को र्दे खो र दि घ रा व न ज म्पु क ले म न मा वि त्त ना ग र्त्ता गो
 आज मे रे व डो भा गे भ य्या को हे छ क सो भ म्पा यै क सि
 कार खो ज द न मि ल्पा का दि न मा ति न ज न न मि ल्पा ता
 ति न चार मे हू ला इ मा सु को भो ज न न क न ह प त भै ग यो
 अ व अ धि भो क मा न मि ठो मा सु खा रु ला प दि मि ठो च्छा रु
 ला भ मि म न को त ज वि ज र्ग र्ति आ धि ध न को ता डो च्छा रु न
 ला ग्पो ए त्पा ता डो छि नि ध न को स र्वो त्कि क न ज म्पु क
 को छ र्ति मा ला गु ग यो ए त्से चो क ले ज म्पु क मा र्ग यो ॥ १३ ॥
 इ ति श्री हि रो प दे स नि ति सो मि त्त ला भ क था हा वि यो
 द सो ध्या य ॥ १३ ॥ ता हा प्रा त्त म थ एक दु ग भ र्द हे मि
 त्र हि र्त्प क सु नु ह व सु क र्ता भ न्पा अ ति चै च ल म रा न ग र्त्
 भ न्पा को हो ध न भै क न द न प न्प ग र्त् स के हा ता सो ध
 न वे यो हि भ न्पा स्त्रि ज न हु छे त प नि आ फ ना का त मा

कोहिकाहिमात्र आहुछन अरुता कोहि आहुदेन
 हमित्रगवाका कु एछोडिदिनुहुव सुनपापाकावसु
 कोइ ध्यानरावननासिविगाको चिजवस्तु जोहु छत
 स्को सोकवगुर्सा होक ए आपह पयोभरिह न्यासन
 मानु हस्कारणवनगयाका सो कछोडिदिनुहुव सु आनदेस
 गरहु भयावधिया होला कसो भयासासुप ह्योमगुपाले
 नेवहा नजान्माहुदितेस्ताकन सुषभन जो जानिहु छ कारणी
 आफ्रोवेवहा मारह न्या रोगिले औषधिवाई रोग छुइत छुइत
 हो करग पाले मात्र हुंदैन कामग रिप्रकास गर्न सक्या मात्र हुन्छ
 नत्रतास्तो अंधाकार वारिदे सायातापनि अंधाते केहिदे वृद्धन
 तसोहो हे मित्र आफ्रादसा अवस्था अगुसा गुदिगुर्न न्याको
 हो आफ्रा अवस्था छुत्पाछिईत कसे नमनु खेकसैक रासोक
 पर्न जाछतस्कारण गामिअनले आफ्रा अवस्था होइत भन्दाहि
 रियंक मुसा मच्छे मित्रपंथायो वचनता प्रातिज्जका मत्र हो कसो भ
 न्यासिद्य भयो कांतर भयो भग भयो येति प्रातिज्जो मात्र आफ्रा
 सा मापन्या हुन जो कोहि वि अभिमानि पुरुष छनति न काले खाता
 आफ्रा क्या वि ए नुदे सुजो तोर सुमा गया पनि आफ्रा परक्रम
 ले हुपडाइ प्रतो पसगरा इवान छनरु सौ हो सो पुरुष मनु खेले अ
 धिगुमि विवाण रिकाम गर्नु कसो भन्य जस्तो गरि ऊहात कोच
 केडिउमद छ तस्तेपरि का ए सित प्रातिह रुकन सुषडुषा फिर्दैरह

छजेगर्गपनाकामछ मरुपइ गरिखनु ठिलगी नारुनुकाम
 कामगारि वंधप्रमि विचारका मविसे वसुएहु न अरुले आप्रमि
 जाइ उपका ~~आ~~ माको वरचापनिगमि कामगर्ग मित्रमितप्रति
 बछाहुनु येतिगुनले ~~अ~~ कभयाकामनुछे थाइलधर्म वासेगर्दछि
 द्विष्टातसोभाबैले उत्तपत्त बयाकाने जकीगुन ~~म~~ पति कुट्टदेवा ~~की~~
 इति श्रीहितोपदेशमिति सारे मित्रलाभ कथाहा चतुर दसो व्यायं
 ॥ १४ ॥ ताहु प्रातर्मंधारकछुत्राभछेह मित्राभाधितिमाधनधियो
 अवमेह संपतिगयोभनिक्याविवाडमानुहुं छुकाअर्थले भेछे
 ताकेछाकेटिहरुकाहातमालियाकोम कट्टो ~~प~~ नि कैले हातमा
 रहं छुकेले हातदेविचुरकी भैमा पर्न जाछु तेसै पीकारले धनभ
 न्याकोकैलेहुं छुकेलेहुं देवतेसैहेमेघकाछाहारि दुर्जनसित
 कोप्रीतिनभा ~~अ~~ नकाखाडु तस्त्रिस्त्रीजनहरुसित काम भोग
 जोभनवैसुधन संपतिभन्याकातथोरै दिनकामात्र सुखभनुतस्का
 रासवैभद्राबुलो तादयाधर्मरहेछु ~~अ~~ केकेहिछे न पछि क्या
 खालाभनिकन पतिआहारको सोचनारागर्ग श्रीभगवानस
 मारकाप्रामिसवैकन आहारको सोचनारागारिगविदिया
 केहुंछेह मित्रजोनाइ ~~ध~~ रवारहं सकाराम्रो जसोगराइदियासु
 धाकन ~~ह~~ रियोगराइदिया मगरकनो चित्रविचित्ररूपगारि
 श्रीद्विगारिपालनगारिराख्याहुं न ~~उ~~ नैइ धरवारतिमीहामिकन

वर्तमानगारिदिक्कहेमित्रअसुविस्तार पानिर्वितीगईछ
 सुनउहवसु कसो भयासर्जनलेगोपिसितभयाकाऊरो धन
 वरेवर दुखकाघाअकेकेहिहै नक्याअलेभया आधि
 धनउपाजवगडाविडोकसुमिहिनेतगारिउपाजवगारिगईछ
 नकेहिविलवलपनगेविग्रनजाजनमभारिसोकसंताप
 लेधावेपानिपायेनधनगयापछिपुनिभ्रमनहोइजान्
 वेतपनिरहै नतस्कारणधनजस्तो दुखअसुकेहिलेदिदेन
 कोहिभन्धुधर्मगतिमिलधनकमाहुनपछिस्कारण
 धर्मगर्नसक्याताधनकमयावठियाहोनसक्यातधनक
 मायाकोचाहिधनकालोभयाहोडिकनरहमाकाआनद
 हुन्छकसोभयाजलथलकाजीवाजनगुपानिजनपीडित
 मुखजोछलनीकाननिकामिठानमिठाआफ्रआफ्रभ
 दासवैप्रानिलेभारि^{वा}छरपडावृक्षकनपनिवायुकाभ
 यहुन्छप्रानिजनकामेत्तुकाभयहुन्छतस्कारणधनहुना
 मनुष्यकनराजाअग्रिचारडुडनदेविमहासर्वडाकोभयहु
 इदेनधनकाकारणलेजनमभारिकसुहिरहुतपछिपनि
 मनुष्यकनधनलेपूतीकेलेहुतुहैरमाधिधनतुल्मा
 उतुपानिकठिनेहुन्छकदचितधनपायाभयालोधनको

रक्ष
 सि
 तस
 न्ह
 जै
 ल
 ने
 स
 का
 र
 स
 ह
 र
 स
 ज
 म
 न
 म

रक्षागर्त कठिनै हृदय धनकार रक्षागर्त गदै सो धन ना
 सिन गयो भया मृत्यु भया भय पवित्र लो सो कहुन जाऊ
 तस्कार रा धन का विल नाग ना चाहि धर्म दुया का चित नाग
 नहु पसु हे मित्र छाना वठाया तजन मूभरि सिद्ध का जर जस्तो
 भैरव का को कमारो भैरव गुप छे हे मित्र धैरे पछे पात का फल गया
 ले के हि प्रयोजन न छे न आहा वासि काल को क्षप नाग नहु पसु मे
 ले सक्या सममत पाइ का हृदय लग न्याहु तस्कार रा मून जाल
 स्म का प्रति छिन्न मात्र का हि निभूया का दान छोटा मनुष्य
 का हृदय न भनिर्म थक दुवाने न्याल छु पतन का गभ
 छे हे मित्र धर्म धर्म परमा छे सवैले आसय न जो गुण का
 ला छे अस कसे का आपदा दे वि कन सज न ताइ उधवा
 र गदै छे न सवैले चाहु गता माफि कृति मीर ला छे मा
 हा पुरुष मं न्यादि मिर ला छे जस्का धा आसरा विलोक
 जा छे विमुखे कोहि कर्कदै न न भनि कथा हा वात गरि
 मं धा कहु गाल छु पतन का गहि न्य क मु सोति मै जना
 आफ ना सुवर्ष तो क्य कारु शा भो जन गरि उ सै वा न
 मा पसु भया ॥ ४८ ॥ इति श्री हितोपदेश निति सोरमि

बलाभकथाहूँ पंचरसो ध्याय ॥ १५ ॥ ताहा प्रात
 मृगभागिगयकोडे विकन केहि भयेको कार राहोत
 मनीमंधापनिपानी मित्रपस्यो लघुपतन कागपनि ठि
 रुखमा वस्न गै हे दस्ता भयको कार रात केहि रेहे नछ भनि
 मित्रहसकन डाकि सिनै जनाय काठाहुमा वस्नार मंधार भ
 रुहेमि मृगकतिका राले बहुत तरास मानि भागिगया
 काहो भदामृग भद मलाइ पापि सुव्याधाले लपेदन आ
 यो एतिमा सरगामा आया कूहोति मिमिसित मित्रगता को प
 निवहुतै इच्छा भया को छ भन्यार हिरंस्क मुसो भद रुहेमि
 मृग हामी हस्ते पनि मित्रलहना को भावना अध्या रंग
 या थपूति मीले उरु भयेन क्या अर्थले भन्या सहज आफ्रा
 मनपस्यो को सित मित्र नुडो ओसन वदसंग भया का मित्र
 भनु तेओ परापूर्व डेषि वस जान्या का भया सो मगर्नु चौथो
 आफ्रकन अगपडा पडामार द्वागन्य किन सो मित्र भनु ये
 तिचार प्रकार जोहु रुनुति नि कन मित्र हुन भनि जानु तस्
 काराले मृगपनि आफ्रै धार रुहिमानिकन आन दसित
 इक्षारि धामपनि नाजै के भया काठाहुमा गे वस्दा भया
 ताहा पदि मंधा एक दुना भद रुहेमि मृगतिमिकन वस्तानि

उत्तलवनामा कस्तुतेतर्सा यो भागि आयो भन्दो हे मित्र
 पापिष्टपाधाले लपे दन आयो भागि आयो ^{या} फा हुन भ
 न्यो एतव फी भगभ-हे मित्र मय क क ए विंतिग र्द सुनु
 हव सत्ता ह प्रोतय क रे स मा कर्ति गभ न्या का धे क रागर
 धियो ते सृदे सका स व मा गत भ न्या काना दु ग न्या का रा ज्ञा धि
 यो तिरा जाले दिग विजे ग दु ता हा वा ट आ इ क न च द्र आ
 मा भ न्या के न दि का ति सा आ इ पु ग्पा हुन ता हि वा रा ग न्या
 भो गे लि प्रा त काल भया प धि ते हि रा हु मा ये क स ए व र भ
 न्या व न रे ह ह ते स र सा व र न मा तो मृ ग आ या हुन भ न्या के
 ते स र पा पिष्ट पा धाले सु न्यो ए अव मै ले क सो ग न्या हो राजा
 काल स्का आ या प्रा त भ क न व डो भय ह न्या हु भ न्द म थ व
 हु वा व रो त्रा म मा नि क न भ ह म त भ आ दे वि व डो त ला
 रु मा गै व ल्म जा उ ला भ न्या ए त व का ग मृ ग डु वै र ना भ ह
 न ते सै ग न्या हो भ न्या र त व हि र्म क मु स ले मन मा वि चा गु रि
 भ ह पा नि मि त्र व ल्म प ले पा द्या मा क सि व ठि या ह वै न क सो
 भ न्या ज ल ज ल को व ल ज हो मा हो ग ह व ल्म को व ल ग ह
 स्म हो म नृ ष्य को व ल थ ल भु नि स्म हो राजा का व ल मी त्रि स्म

होरसूकाराजलमावहपालेपावामावसिसप्रनद्धभमा
 काकुरलेताभस्तोगारिआफ्राशिविलेआफ्रासिकोस्त
 नविस्तनापुरुषलेमर्दनगपाकोहरिकनवनियाकाछेरा
 कार्मताप^भअयेथ्योतस्तेपरिकारलेतिमीकनपाविहेला॥५॥
 ॥इति श्री हितोपदेशसूक्तिसोमित्रलाभकथाहासोर
 दुस्रोध्याय॥१६॥ ताहाप्राप्तयेतिवचनसुनितिनैडानाले
 भन्नुहेमित्रहृन्पकयोक्थाहुकसोहेआशागुर्तुह
 प्रसभगाहाहृन्पकसुतोअरुयेकदेसकनौअभनपाका
 नगरमाविरसेनभनपायेकएजाधियातिनैराजालेविरा
 जंत्यपुरकोतुंगवलभनपाराजपुत्रकनसुतागुल्पा^{प्रा}ति
 राजाकादोलतधुनबहुतैरहेछरहन्दावस्य^{प्रा}वातिअया
 कायेकादिगुला^{प्रा}हृन्पकइल्दाफिटडांहुतेराभिवेडासिसि
 एवमवर्तनामगत्याकियेकवनियाछेराकिस्त्रिनदे
 विपायारउसैवेरदेविआफ्राघरडाइकेनकामभोगले
 पिडामानितेसरसवसवतिथानीडुतपठायारवन्पुकार
 पानितेसराजालाइदेविछनरकामवानलेपिडाभैहनेए
 जाकाचित्तगगर्तलागिनकसोभन्यास्त्रितरहसुलेयोव

डोयोछाडि भनि विचार गनु है न कसो भन्ना गाइ हुरु
 आचरु जादा भिगे घासु जाहापाठु छुताहि जा न्हरे सै
 ताहु सित सिजन नहुरु पनि ज्ञान पुरख हुरु कन वह
 तै चारु गद दं न ताहु पछिर जाले कुत पठाया का पुग्गा
 आशा भया का विस्तारुता न गन्ना रावै न्यवति भये
 हेतु न हो जो सि परको कामार्थ करण भामर्थ हवम जो
 सि छोर छोरि की महतारि हवम जो सि आफु प्राण चाहि
 पनि स्वामि पिया ऐ हवम जो अस्त्री प्रतिव्रता बोला उ स्यस्ता
 सिजन कन सि भन्नु कसो भन्ना अग्नी साक्षि राखि पाया का
 स्वामि कन छोडि अहका सरा मा जानु सिजन का धर्म होइ
 नतस्कार गाले मेरा स्वामि का आशा भन्ना बेल विचार गनु प
 नि है न आशा न पाइ आहुता मेरा साप वचन है न ति पुरख
 का वचन ले लोकरा हुन सकै है न अनि न डत हुरु दुर्तरा जा
 थाइ गै सव कर का वृद्धा त गन्ना तवरा जा भन्दै न हेतु हो
 यो कर मक्का भन्नु मलाइता कामवाह गाले पितगीर व्येछ
 यो बेल मेरे शक्ति पनि हरण भै रहे छु शक्ति पनि मेरो है न
 रावै न्यवतिले निकै भनि छु रक्षा फल स्वामि का हात पार सो
 पन्ना का भइत हो को अर्थ कसो गरि पान्यो हो उपाय ग

रिदियावकि ~~पा~~ ~~ना~~ मन्दा कुत विती गर्ह हेमाहाराज
 उपायगर्नुहवस उपायले सक्याको कामपराक्रमले
 साकिन्नादिस्त्रान्त अयाकोपतिद्ध न उपायकमलले यक
 उछो स्पालले सिमकाट लगिक न मला हातिलाइ मान्ये
 थो उपाय ~~भ~~ ~~पा~~ को तेस्ताहुन्छ न मनिहुतले वितीगन्या
 ॥ ५५ ॥ इति श्री हितोपदेश नितिसो मित्रलाभक थाहा
 सप्तदशोऽध्याये ॥ १० ॥ ताहा प्राप्ततवरजा आशागर्ह
 नहेहुतले योक थाहाकसो होमलाइ वृतासरुनाइ देहु
 भन्पार हुतावितीगर्ह हेमाहाराज सुखहवसयेक वं
 हारिन्प अयाका वनविषेक पुरतिलक नागगयाका
 यकमलाहाउरेहुन्छ तस्रहातिकन स्पालका पौजलेद
 व्यो र सवैस्पालहस्ले चितनागर्नुलाग्नो तवयस्रहा
 तिकनकोहिउपाय पराक्रमले मानसक्याहुदिताहामिसवै
 कनचारपाच मैहास्मतामा सुवान प्रग्दे हो भन्दातव
 तस्रस्पालका पौजमा वदे अहकारियक उछो स्पालहरे
 रतेस्रले तोहातिममास्त्रलाभनितेस्रले येक प्रतग्पागन्यो ता
 हापदिहातिकानजिक उछो स्पालग ~~वा~~ हातिकनसास्र

गप्रनापगन्धो वितीगर्तलागोहे भलापुरुष मतिगजा
 कृपा रावगुहसुभन्दाहातिमिच्छुनतकोहोसुकतावाट
 आइसुक्कामिच्छसुभन्दिहातिलेजमुककनभन्दाजंमु
 कविंतिगछनेहमाहा राजकपूरतिहकमजमुकहुंयेक
 वनमासवैसिंहहसुल्लैयेकमतेगारिम्लाइतिमिथाइपग
 योहमाहा राजयसोअन्याकोछकोहिअलवारले सुध्वं
 भैरहवपावडाप्रतापिहुन्याधर्मात्मानितिसास्त्रान्या
 जोछुनतेरत्तापुरुषकनमृधिविमास्वामितुल्याहुनो
 गपहोअरूपनिवितीगर्दुसुनुहुनसुक्काहो भन्नाअधी
 धीरागाहुनपद्धिधनसंपतिसहितगारिजेवठाहुनराजाभया
 कागाहुमाधनसंपतिस्त्रिजगलोकलस्कारसवैहवसुक्काहो
 भन्नाजस्तोगारिसवैप्रानिकनप्रतिपातनागहुतिराजाभंनु
 वस्मेधनवस्पाहुतिताप्रानिहसुज्जुलाकठिनैहुहुतस्का
 रगालेसंसारमा राजाभयाकाठाहुअनेकपरिकालेधनज्जु
 सोआइपासिपर्नजालाभन्पाटराखलेअनेकजेलगारिलोक
 संसारहुहुआफ्राआफ्रावेगानामावस्दछुनविचैसंसा
 रमारहैदेवतसर्थस्त्रिजगहसुडरकानिमित्तआफ्रावसुम
 मनपत्यापनिवपत्यापनिरोप्रोभयापनिनभयापनि

रोगि भयापनि न भयापनि उछो भयापनि दारिद्र
 ऊर्ध्व भयापनि मेरा वस्त्र इने हुन अनि छोड़ि कन
 अरु जगत् सके नरुत्कारे लो हे माहाराज आज
 काल मग्न नट एस्त चाडे चलाइ गर्नु ह्वम् भनि जम्बु
 कडगुदै गयो ताहा पछि हाति पतिर जाइ कालो भले
 जम्बुकको पछि पछि उगुदै नान्दाता वडो सिम माप
 न गयो तपक प्ररुतिलक हाति भन्दे उछो जम्बुक अ
 वमैले कसो गन्नाहि मरा वुलो सिम माप नान्दा जम्बु
 कहा सि वडो ह्वमानै सित भन्दे माहाराज मेरा पछि
 मासमा सि ठकल नुह वस्त्र मजम्बुक पाजिको विचार
 मानि राजा हुन भनि आयौ रूहि फल पावौ भन्दा तव
 हाति भन्दे तेरा विश्वास लेयति कै हु न्यार हे छु अव मेरे क्या
 गति होला भनि वडो विस वूद गरि करयो र हल न चलन
 न भौ विलाप संग रुनुला गेप्यो ॥ ५६ ॥ इति श्री हितो पेदस्
 नितिसारे मित्र लाभ कथा हा अष्टादश अध्याये ॥ १८ ॥ ता
 हा पा राव व भन्पाको ह्व सर्जन का संग गन्पा वछो लाइ
 र्जन का संग गन्पा महला भन्पो हातिकरु रुदा कर
 उदै मग्नियो ताहा प्राप्त तव डुत भन्दे माहाराज यस्
 काराले भन्दुत वडु पाय गर्नु ह्वम् भन्पो रतवरा जाले

कइनि कोउ पद सरलिक न ते सराव पवटिका लोभा
 त्याचा रुदत वनिजा कनडा कील गेरा राजाले काण
 रिकामाहि सवै काम गमा मला रुदा भया वनिजापनि
 असि नै काम कौं गर्न हा गेरा राजाले मला इ पिया ऐ
 गरिराखो भनि से सै गरि रुदा वरदा बहुत दिन वित्याप
 दि पर्वकाल भयापदि एजाले स्नान गरि सुवि नै कन सो
 पर्व कारत काग हुना मुखा जिरा विचारु दल वनिजा कन
 भयो हेवा नेना मेलै मै हा ^{दिन} निम गरि वत गर्न आत्मा तस
 निमित्त मेलै आज हे वि नित्य रात्री मा कलिता कल कितरु
 निस्त्रिहरिक नो दिन मात्र स्त्री डा कित्या रुग अस्त्री कन मेलै
 जोगेता सिद्ध पुजा गर्न छ मगिरा जाले भन्दा वव चारु दल
 वनियाले हवस भनि राजाले नस्तोगरि आणा गर्नु भ
 येथो तस्तै तरु सित रात्री एवित रु निस्त्रि पाश द्या
 रात्रि विचये राजाले तिस्वाप्नी हस कन कया गर्दछु भ
 निवने आते चित्रा गरि हेरि वस्पा एवते सुदुर्ग वल एजा
 ले ते सरा सिद्ध न हस कन आ फुले न छोड वा छिया वा छिया
 कहता कपरा पै इ निका मानि सरसा धलगा इ पम इति

अस्तासुदिनउड्चागन्यापदिचासुदतवदि
 यालेराजाकोतेसुतानेहनदेविविस्वासमानिकन
 धनकालोभनेयेकदिनताआफुस्वाप्तीरावीन्यवति
 लागिराजालाहोपिदियातवरजालेआफुमनपनाकि
 पियारिस्त्रीपायारजस्कारामायतिकामगन्यापति
 रावीन्यवतिकनविहिउठैअंकमालिगारिचुवनागारि
 वृत्तसितपलमावसिचारपुकारसंगसंयोगगनलाग्या
 तवचासुदतवनिआलेहोरहोचित्रकारलेव्यामहो
 रह्यामजिविलघादरहोकेहिगनभनपनिदुरु
 धारहोनसोप्रकदेव्यामजिभैरहोवडोसैतापमापनो
 तवहिर्न्यकमुसाभरुहेमित्रलघुपतन्कापपछितिभी
 लाइपनिनस्तैहुनजालातस्कारामैलेभन्याकोहो
 ॥३॥इतिश्रीहितोपदेसुनितिसोमित्रलाभकथाहु
 नवर्षिसुतिध्याये॥५॥ताहाप्राप्तहिर्न्यकमुसालेभ
 न्याकोवचनसुनिकनमंथाकहुशालेपनिउलेमोहप
 न्यामजिभैकनलजापछागयोतवहिर्न्यकहसति
 नैजमाभंथाकहुशपादिपदिगेठुठामाछोआता
 हापछिइनितिजेजमायकावावालेभंथाकहुशदे

व्याख्यानलेहतिमायोतिभिन्नकाविपतीदेविमृग
 कागमुसोतिनैजनामधरकहुवापदिपदिजा
 हाभयातवाहिरूपकमुसोभरुहोमित्रहोविधा
 ताकाविमुखभयापदिदुष्टकाअनर्थमाथेअन
 र्थपाइदोरहेछसोभाषसिद्धभयाकाभित्रवडा
 भागपेलेमात्रपाइछजस्तोगारआप्रहामहतारि
 आप्रहान्नि कंनविस्वासगारिदुस्तस्तैगारिविस्वास
 मित्रथाइपनिगारिदुस्तहजमापनिआपंदंआपनि
 मित्रलेभावनदिइदेनअनीमित्रकागुरारसंझि
 हुनलागेतसंधप्रवृत्तमागारिआयाकाफलहा
 मिलेभक्तमानआजगंनअयोजस्तैगारिप्रानिहुरु
 काजंनमृफिदोरहंदुस्तस्तैवेहोरासितयसुजभयो
 पानिफिदोरिआछनयोकरापनिमंहजेहोजिहिसारि
 कोउत्पत्तिभयोतस्कोनासभयोभनिजानुनाहासीष
 तिताहाविपतिजाहासंजोगताहावियोगतस्करसाले
 यसससिआमासवेधोकलेउत्पन्नहुन्यावस्तुताहेकेवे
 रनासिजादुस्तवविचाएगारिकतहिरूपकमुसोअरुमन
 कासोकआफलादिन्यासत्रुकाभयठारिदितापृथीवि
 विस्वासगत्यआपस्तकाआसव्येहुनइहुइअदोरपरस्य

शिजस्ताविधाताले श्रीसिगारि राखाकाछर टस्का
 रागसहजलेकभायाका मित्रवडा दुल्लभले मात्रपाइ छर
 अरुदुस्रमित्र भन्नाकोता आफ्ना चर्ति कलामा धन
 कालोभले मात्रआमिदुछर इनहसका परिदुपाहे
 नुताडावविपति पर्दछ तसुवेला माजानी छतवहिर्
 न्यकलेयस्तारह **ही** तवहर्ते विलापगन्या भुगल
 छुपटरड्डकन भठालागो हेमित्रहे यावतकालय
 सुपापिछ व्याधालेपनदेवि निस्की तावतकालवि
 त्रमथाकनछोडाउपाउपायगर्नुहुवस्र भन्दातव
 ति दुर्जनमृगकाग भ छहेहिर्न्यकमित्र वेत्त आशाग
 नभयो येसुवेला मा आफुले जान्नासम्मको उपायप
 तातातकालैगर्नुभया वठियाहेला भन्पारहिर्
 न्य **वा** छहे मित्रयसोगर कसोभन्ना आद्यितिमि
 नजिकजाइकन मजैगी वहुहुवस्र ताहापछि काग
 मित्रले उचाले दुग्पाभैगी वहुहुवस्र तवते सुपापि
 छ व्याधाले मृगकनदेवननरमानिका लोभलेकछुवा
 छोडिकनआउननरतसुवेला मा पासामकाटिदेदुलातेहुओ
 उसरमासुधर मित्रभागन नभन्पारवठियाभनेमानि
 मृगलछुपटनलेतरैगयातव व्याधाले मृगकनदेवि

7

ANDERSON, WRIGHT & CO



1448

PRIVATE TRADE MARK

CALCUTTA

जोगदामा
एजन्ता

70

20

7542

दक्षिण

43

Yc

150

272

25 0 6

12

23



Handwritten text in two lines, likely a list or index, written in a cursive script on aged paper.

ASHA ARCHIVES

2324